IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Shiksha Me Hindu Studies Hindu Adhyayan Ki Avashyakta Aur Iska Mahatav

(शिक्षा में हिन्दू स्टडीज (हिंदू अध्ययन) की आवश्यकता और इसका महत्व)

नवनीत कुमार

स्वतंत्र शोधकर्ता, पब्लिश्ड हिंदी ऑथर [1], एम् ए (हिन्दू स्टडीज) ईग्नू (इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय)

प्रशिक्षक एवंम शोधकर्ता बालाजी डोर कंपनी, हरियाणा, (भारत)

ORCID 0009-0001-5042-8502

सारांश

अज्ञानी स्वयं का विनाश करता है | तो अधर्मी संसार को ले डूबता है | दुनिया में ढेरों विकसित और विकासशील देशों का हाल भी यही है | भारत ने विश्व को शून्य से लेकर धर्म, ज्ञान, योग, शांति, प्रेम तथा और भी ना जाने क्या-क्या दिया | आज के संसार को महज आधुनिकता, धन, नंगापन और चालाकी नहीं | वरन नैतिकता, धैर्य, विश्वाश और आपसी भाईचारे की प्रथम आवश्यकता है | क्योंकि शिक्षा महज रोजगार का साधन नहीं | वरन विश्व में सुख, शांति और तरक्की बनाए रखने वाली वो कुंजी है | जो अधर्मियों के हाथ पड़ते ही धर्मांतरण, षडयंत्र और विनाश को न्यौता देती है | याद रहे की अंततः **"धर्मो रक्षति रक्षितः"** अर्थात सम्पूर्ण विश्व की रक्षा तो मात्र धर्म संगत विचारधारा और प्रेम से ही होनी है | अतः युद्ध, द्वेष, अहंकार और व्यभिचार की और बढ़ते संसार को | केवल और केवल सत्य सनातन धर्म और विशुद्ध हिन्दू संस्कार ही बचा सकते है |

स्पष्ट कहूँ तो, सच्चे और सहज जीवन के लिए | सम्पूर्ण विश्व को हिन्दू अध्ययन करते हुए | **"वसुधैव कुटुम्बकम"** अर्थात सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है | इस विचार को मानना और पोषित करना होगा | आलोचक चाहे कुछ भी कहें | वैश्विक शांति और दुनिया के समग्र विकास हेतु भारत का साथ और नैतिक शिक्षाओं का अनुसरण अनिवार्य है |

मुख्य शब्द : हिन्दू स्टडीज, हिन्दू अध्ययन, शिक्षा निति, वेदपुराण, धार्मिक शिक्षा, मोदी सरकार, हिंदुँत्व, शोधपत्र

प्रस्तावना

"बिना ज्ञान नर पशु समाना" अर्थात शिक्षा, बुद्धि और ज्ञान-रहित मनुष्य पशु के समान है। उक्ति दर्शाती है की, मानव और पशु के बीच शारीरिक बनावट के इलावा, एक मुख्य अन्तर | उनमे विध्मान बुद्धिमता और धार्मिक ज्ञान का भी होता है।

"पोथी पढ़-पढ़ जग मूआ पंडित भया ना कोए, ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होए" – कबीरदास, जिस तरह प्रेम के आभाव में सम्पूर्ण वैश्विक ज्ञान भी अधूरा है | ठीक वैसे ही **धर्म रहित शिक्षा** मिट्टी के ढेले समान है | आज का आधुनिक समाज, साधन संपन्न दुनिया और सामर्थ्यवान लोग | शिक्षित होने के बावजूद मानवता को युद्ध, घृणा, अहंकार, शोषण, अपराध, आतंकवाद और प्रलय की और धकेल रहे है | जिसका मूल, मात्र अशिक्षा नहीं वरन धर्म विमुख लोग और धर्म रहित शिक्षा है |

आज का शोधपत्र सीधे बात करता है | शिक्षा में हिन्दू स्टडीज (हिंदू अध्ययन) की आवश्यकता और इसके महत्व की | जहाँ विश्व के अग्रणी शिक्षा केंद्र, हिन्दू शिक्षाओं को पढ़ा जीवन में तरक्की करते हुए शिक्षा, व्यापार और तकनीकी में नयी उचाईयों को छू रहे है | तो वहीँ हम भारतीय, अपने ही ज्ञान को पढने और जीवन में आत्मसात करते हुए संशयग्रस्त रहते है |

सच्चाई तो ये है की दुनिया को शून्य से लेकर धर्म, संस्कृति, दर्शन और निति का पाठ पढ़ाने वाला **भारत**। रामभक्त हनुमान की तरह अपनी विलक्षण शक्तियों (अर्थात धार्मिक शिक्षाओं) को भूले बैठा है। जिससे पाश्चात्य संस्कृति का उत्थान और हमारा पतन जोरों पर है। जबकि पूर्ण सत्य तो ये है की, भारत आज भी विश्व गुरु बनने में सक्षम है। बशर्त की हम ढाई आखर प्रेम अर्थात **गूढ़ भारतीय परम्पराओं, वैदिक ज्ञान, वेद तथा उपनिषदों की शिक्षा, यज्ञ, होम-हवन, प्राचीन युद्ध कला, निति और सहज जीवनशैली** के मूल्यों को समझने हेतु सज्ज हो। क्योंकि जीवन में केवल धन के पीछे भागने वाला इन्सान, अक्सर चीर-स्थाई सुख और शांति से वंचित रह जाता है।

"वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है। विश्व को यह विचार भी महान हिन्दू संस्कृति की ही देन है। अतः वर्तमान पाठयकर्मो में पढाया जाने वाला विषय "हिन्दू स्टडीज" ऐच्छिक नहीं। वरन अतिमहत्वपूर्ण विषय है। जो बताता है की **हिन्दू कौन है**?, **हिन्दू क्या है**? तथा किस प्रकार हिन्दू स्टडीज पाठ्यक्रम, विश्व-कल्याण और विशेषकर भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए अपरिहार्य है।

लिटरेचर रिव्यु

निम्न आंकड़ों द्वारा हम, हिंदू स्टडीज की आवश्यकता और इसके महत्व को समझ सकते है। साथ ही वर्तमान में इसकी वैश्विक स्तिथि और भारत में इसके तात्कालिक स्तर को भी अच्छे से समझा जा सकता है।

चित्र साभार - "Census Of India Dot Net"

India Religion Wise Population

Religion	Count	Percentage
Hindu	96,62,57,353	79.8%
Muslim	17,22,45,158	14.23%
Christian	2,78,19,588	2.3%
Sikh	2,08,33,116	1.72%
Buddhist	84,42,972	0.7%
Other religions and persuasions	79,37,734	0.66%
Jain	44,51,753	0.37%
Religion not stated	28,67,303	0.24%

Based on Data from Census 2011

Explore State wise Religion Population

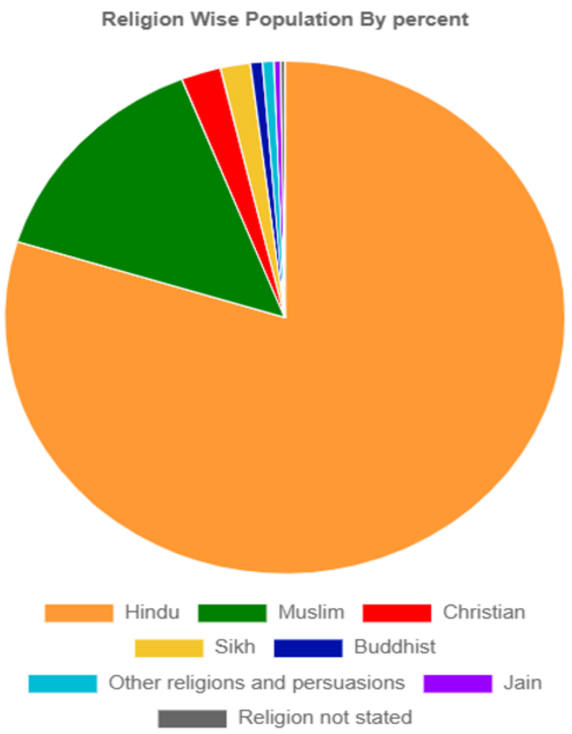

India Hindu Population in 2026

हिंदू-धर्म, विश्व के प्राचीनतम और व्यापक धर्मों में से एक है। भारत में बसते 147 करोड़ (से अधिक) लोगों के जीवन का आधार। वहां की वैदिक शिक्षा, धार्मिक ज्ञान, सांस्कृतिक धरोहर और स्पष्ट आध्यात्मिक मूल्य ही है। वर्तमान में भारत की 79.8% से अधिक जनसंख्या **स्वयं को हिंदू** मानती है, [2] बावजूद इसके भारत एक **धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र** है। आंकड़ों की माने तो भारत एक हिन्दू बहुसंख्यक देश भी है। जिसे बुद्धिजीवी **"हिन्दू-राष्ट्र"** कहकर भी पुकारते है [3]

विडंबना देखिए, बहुसंख्यक होने के बावजूद, कुछ पुराने गलत (राजनैतिक) फैंसलों और पाश्चात्य अंधानुकरण के चलते वर्तमान हिन्दु, विशेषकर युवा देश के गौरवशाली इतिहास और जड़ों को भूलने लगा है। वहीँ दूसरी और नामि-गरामी **विदेशी** संस्थान जैसे की ऑक्सफ़ोर्ड, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तथा हार्वर्ड इत्यादि। दशकों से हिन्दू स्टडीज आधारित पाठ्यक्रम अपने देशों में कुशलतापूर्वक चला रहे है। जबकि भारत में उक्त पाठ्यक्रम शैक्षणिक संस्थानों में अपेक्षाकृत विलम्ब से शुरू किया गया है।

भला हो वर्तमान सरकार का, जिसके चलते आज हिन्दू स्टडीज राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 प्रावधानों के अनुरूप मान्य है। एनईपी के तहत, अब छात्र कंप्यूटर विज्ञान, वाणिज्य और राजनीति विज्ञान जैसे समकालीन विषयों को पढ़ते हुए | गौण विषय के रूप में हिन्दू अध्ययन पढ़ सकते हैं। बावजूद इसके सरकार को तुरन्त एक व्यापक पाठ्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है |

जिसके अंतर्गत छात्र, प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन करते हुए | ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, धर्म, कर्म, कला, कौशल, समाज और वैदिक हिन्दू संस्कृति आदि विषयों का गहन अध्ययन कर सकें। अन्यथा वो दिन दूर नहीं ? जब **"घर का जोगी जोगडा, बाहर का जोगी सिद्ध"** कहावत चरितार्थ होने लगेगी [4]

शिक्षा का स्वरुप बदला है आत्मा नहीं

प्राचीनकाल की बात करें तो, सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा का स्वरुप | वर्तमान शिक्षा पद्दति से भिन्न था | उक्त काल में शिक्षा मात्र जानकारियों को एकत्र करने, अथवा रोजगार प्राप्ति का साधन नहीं थी | वरन लोग इसे गुरुकुल/ तथा आश्रमों द्वारा - धर्म, संस्कृति, कौशल और दुनिया के समग्र विकास हेतु अर्जित करते थे | परन्तु वर्तमान में शिक्षा देने वाले गुरुओं, और इसे ग्रहण करने वाले छात्रों की सोच एकदूसरे के विपरीत है | परिणामस्वरूप हिन्दू अध्ययन का महत्व अधिक वांछनीय और महत्वपूर्ण परिलक्षित होता है |

ध्यान रहे, शिक्षा में धर्म का समन्वय, केवल भारत में ही नहीं | अपितु यूनान, चीन और मिस्र इत्यादि देशों में भी देखने को मिलता है | तब भारतीय शिक्षा के मुख्य बिंदु गुरुकुल ही थे | जिनमे शिक्षा का आदानप्रदान **"वेद और उपनिषदों"** के अनुसार ही होता था | हिन्दू धार्मिक शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण द्वारा जातक को **"मोक्ष"** की और निर्देशित करना था |

उक्त काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे विख्यात शिक्षा केन्द्रों में, धर्म के साथ-साथ, खगोलशास्त्र, निति, दर्शन और चिकित्सा इत्यादि विषयों को भी पढाया जाता था | प्राचीन यूनान में भी कला, साहित्य, दर्शन और राजनैतिक शिक्षा का जोर था | अरस्तु, प्लेटो और सुकरात जैसे महान दार्शनिक यूनानी शिक्षा पद्दति की ही देन है |

इसी प्रकार चीन में "कन्फ्यूशियस" विचारधारा के अंतर्गत, अभियर्थियों को नैतिकता, इतिहास और अनुशासन के द्वारा | सरकारी सेवाओं और सेना के विस्तार हेतु सज्ज किया जाता था [5]

चित्र साभार – Twitter (भारत अध्ययन केंद्र)

भारत सरकार ने औपचारिक रूप से, वर्ष 2021 में ही **"बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय"** कला संकाय (के भारत अध्ययन केंद्र) में हिन्दू-अध्ययन पाठ्यक्रम आरम्भ कर दिया है |

इसके इलावा निकट भविष्य में कुछ अन्य शैक्षिक संस्थान और महाविद्याल भी, हिन्दू स्टडीज पाठ्यक्रमों को आरम्भ करने जा रहे है | जो महज शिक्षा का अकादमिक क्षेत्र ना होकर | हिन्दू धर्म की बौद्धिक, सांस्कृतिक और पौराणिक परम्पराओं के अन्वेषण एवं संरक्षण का शुभारम्भ होगा |

जिसमे हिन्दू वैदिक शिक्षाओं, धर्म, निति तथा दर्शन के विकास हेतु, शोध कार्यों को जोड़ा गया है | साथ ही पाठ्यक्रम में कला और साहित्य पर हिंदू चिंतन के प्रभावों, तथा आधुनिक समाज में हिन्दू आध्यात्मिक शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाएगा। [6]

सनद रहे की वेदपुराण और ग्रंथों में वर्णित शिक्षाएं मात्र दिखावा नहीं | वरन एक सम्पूर्ण जीवन-शैली है | जिसमें दर्शन, नैतिक-शिक्षा, अनुष्ठान और सामाजिक प्रथाओं का समावेश हैं। इसके इलावा मंदिरों में पूजा विधान, देव पूजन, योग अथवा ध्यान (यानि की मेडिटेशन) संबंधी विधाओं, विविध प्रथाओं इत्यादि का सम्पूर्ण ज्ञान | हिंदू विचारधारा की **बहुलतावादी** गतिशील प्रकृति को दर्शाता हैं।

उदाहरण के लिए, भारत में दीपावली का त्यौहार, अंधकार पर प्रकाश की विजय, अथवा अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है | तो वहीँ दूसरी और रंगों का त्यौहार “होली” जीवन के विभिन्न आयामों | जैसे की सुख-दुःख, शोंक, दया, प्रेम, भाईचारे और एकता को दर्शाता है |

इसलिए, जैसे-जैसे दुनिया के लोग परस्पर निकट आ रहे है | देश अथवा लोगों में आपसी प्रेम अथवा विरोध भी बढ़ने लगा है | जिसके शमन हेतु, विश्व में हिन्दू स्टडीज अथवा हिंदू-धर्म का प्रचार एवं प्रसार अनिवार्य हो चला है | जिससे न केवल सांस्कृतिक साक्षरता को बढ़ावा मिलेगा | वरन समाज में सहिष्णुता, करुणा और विविध दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान की भावना भी पोषित होगी | साथ ही वैश्विक सद्भाव और परस्पर प्रेम भावना को भी बल मिलेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दू स्टडीज (हिंदू अध्ययन) का क्या महत्व है?

सर्वमान्य है की शिक्षा के द्वारा, व्यक्ति अपनी नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं का विकास कर पाता है | जिससे उसे जीवन की कठिनाईयों और संघर्षों से लड़ने की शक्ति मिलती है | सुखद बात तो ये है की **हिंदू स्टडीज** के माध्यम से | व्यक्ति को भारत की प्राचीनतम और सर्वाधिक प्रभावशाली (आध्यात्मिक) परंपराओं को समझने की दृष्टि प्राप्त होती है।

परिणामस्वरूप वह प्राचीन हिन्दू ग्रंथों, दर्शन तथा नैतिक शिक्षाओं में पारंगत हो | समाज की सकारात्मक अथवा आलोचनात्मक व्याख्या करने में सक्षम हो पाता है | अंततः जिससे मनुष्य के बौद्धिक विकास, सांस्कृतिक साक्षरता और समग्र विश्वदृष्टि को बढ़ावा मिलता है।

हिंदू शिक्षाओं का अध्ययन हमें, धर्म **(कर्तव्य)**, कर्म **(कार्य और परिणाम)** और मोक्ष **(मुक्ति)** जैसी अवधारणाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है | जो दर्शन, इतिहास और तुलनात्मक धर्म के क्षेत्रों में मूल्यवान हैं। इसके अलावा, यह अंतर-धार्मिक संवाद, सांस्कृतिक सहिष्णुता और भारत की बौद्धिक विरासत को बढ़ाने में सहायक होता है। [7]

हमारे जीवन में कुछ ऐसे अवसर भी आते है | जब धर्म की व्याख्या तो छोड़ो, लोगों को शिव-महादेव के साकार अथवा निराकार स्वरुप में भेद तक ज्ञात नहीं होता | हिन्दू देवी-देवता तैंतीस करोड़ हैं अथवा तैंतीस कोटि ? हम ये तक नहीं जान पाते और व्यर्थ की बहस अथवा चर्चाओं में उलझकर भ्रमित हो जाते है | ऐसे में भक्तिमार्ग, वास्तुपुरुष, भजन, आरती अथवा वेदों की व्याख्या करना तो हमारे लिए दूर की कौड़ी साबित होने वाला है |

विशेषकर हमारे युवा, अधकचरे ज्ञान अथवा भ्रम-वश ऐसे प्रश्नों के आगे हार जाते है | इसलिए अगर दुनिया को मुहंतोड़ जवाब देना है | शर्मिंदगी और अपयश से बचना है | तथा आने वाली भावी पीढ़ी को कुछ देकर जाना है | तो भारत के प्रत्येक नागरिक अथवा ज्ञान पिपासु मनुष्य को हिन्दू स्टडीज का गूढ़ अध्ययन अवश्य करना चाहिए |

कहते है वैज्ञानिक “एल्बर्ट आईन्स्टाईन” अपने पास **“श्रीमद्भागवत गीता”** रखते थे | सोच के देखो की भला कोई विदेशी वैज्ञानिक हमारे पूजनीय धार्मिक ग्रन्थ को क्यूँ पढने लगा | यक़ीनन उन्हें भी कुछ तो ज्ञात हुआ ही होगा | कहा तो ये भी जाता है की **भारतीय वेद-पुराण** “एल्बर्ट आईन्स्टाईन” की थ्योरी $E=mc^2$ से कहीं अधिक व्यावहारिक और सुपीरियर है | [8]

यानि की हिन्दू ऋषियों की वाणी, ग्रंथो और गूढ़ विषयों के अध्ययन से | एक साधारण इन्सान भी “बुद्धिजीवी” और ज्ञानवान बन, समाज की कुरीतियों और विषमताओं का शमन कर सकता है | अतः अधिकाधिक इच्छुक लोगों को हिन्दू रीतिरिवाजों, शिक्षाओं और धार्मिक व्यवहारशैली का अध्ययन अवश्य करना चाहिए |

इसी सन्दर्भ में हार्वर्ड प्रशिक्षित वैज्ञानिक **डॉ. टोनी नादेर** का मत है की | मनुष्य के तंत्रिका तंत्र (Human Nervous System) और वेदों (Vedas) के बीच गहरा संबंध है। जो दर्शाता है की क्यूँ और कैसे हिन्दू अध्ययन - मानव के विकास और वैश्विक शांति इत्यादि का मार्ग प्रशस्त करता है | डॉ. नादेर, जीवन के अंतर्निहित तर्क (अर्थात underlying logic) की खोज करने वाले वैज्ञानिक के रूप में | इस अंतर्संबंध का अध्ययन करते हुए कहते है की कैसे **"वेद"** (Vedas) मानव अनुभूति का ध्वनि रूप में प्रलेखित अभिलेख हैं। तथा कैसे प्राचीन विद्वानों ने प्रकृति की लय (natural rhythms) को समझने के लिए | मानव तंत्रिका तंत्र का उपयोग, एक संवेदनशील रेडियो रिसीवर की तरह किया।

ध्यान रहे की यहाँ बात, हिन्दू शिक्षा के अंतर्गत पढाए जाने वाले योग, ध्यान और मैडिटेशन के बारे में की जा रही है | की किस प्रकार मनुष्य का मन एवं मस्तिष्क, वेदों की वाणी और मंत्रोचारण इत्यादि से जुड़ा हुआ है | विज्ञान में, इसे ट्रांसड्यूसर प्रभाव (transducer effect) कहा जाता है | जहां ऊर्जा का एक रूप दूसरे रूप में परिवर्तित होता है |

ठीक वैसे ही जैसे की एक माइक्रोफोन ध्वनि तरंगों को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर अपने कार्य को संपन्न करता है। देखा जाये तो इस दृष्टि से, मानव तंत्रिका तंत्र इन्ही नियमों का (भौतिक रूप में) अभिव्यक्त रूप है। यह संबंध इस सिद्धांत पर आधारित है कि **वेद और तंत्रिका तंत्र दोनों** एक ही अंतर्निहित नियमों से उत्पन्न हुए हैं। यहाँ तंत्रिका-तंत्र एक जैविक माध्यम है | जिसके द्वारा आप ब्रह्मांड को समझ सकते है | इसलिए इसकी संरचना स्वाभाविक रूप से वेदों में वर्णित नियमों को प्रतिबिंबित करती है। परिणामस्वरूप **डॉ. नादेर के शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क की संरचना वैदिक ज्ञान के वर्गीकरण से मेल खाती है**।

जीव-विज्ञान में इसे, समरूपता कहा जाता है | जिसमे दो भिन्न वस्तुओं की संरचनात्मक आकृति समान होती है | क्योंकि वह दोनों समान नियमों का पालन कर रही होती हैं।

वैदिक साहित्य में ज्ञान के 40 पहलुओं का वर्णन है | जो मानव शरीर क्रिया विज्ञान की 40 कार्यात्मक प्रणालियों के अनुरूप हैं। उदाहरण के लिए, योग या एकीकरण की अवधारणा मस्तिष्क में तंतुओं के जुड़ाव में अपना भौतिक प्रतिरूप पाती है। जिस प्रकार **ऋषि पतंजलि** के योग सूत्र चार अध्यायों में विभाजित हैं | ठीक उसी प्रकार मानव मस्तिष्क भी चार भागों में विभाजित है।

जीव विज्ञान में, ये तंतु विभिन्न संवेदी इनपुट के बीच एक सेतु का काम करते हैं | जिससे मस्तिष्क वास्तविकता का एक एकल, एकीकृत अनुभव उत्पन्न कर पाता है। एकीकरण की यह **जैविक प्रक्रिया ही योग की सटीक कार्यात्मक परिभाषा है**। [9]

भारत में आज विभिन्न शैक्षिक संस्थान, हिंदू स्टडीज पाठ्यक्रम विशिष्ट स्नातकोत्तर स्तर तक प्रदान करने लगे हैं। जिसमे आप डॉक्टरेट (यानि की पी एच डी) लेवल तक जा स्वयं को बौधिक एवं आर्थिक रूप से शशक्त कर सकते है | जिसमे सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ विषयगत शोध के अनेकों अवसर भी उपलब्ध हैं | परिणामस्वरूप युवाओ को शिक्षा, धार्मिक अध्ययन और सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में ढेरों रोजगार मिलने की संभावना प्रबल है।

साथ ही जो लोग हिन्दू-धर्म के प्रभाव, महत्त्व और उसकी ज्ञान परम्पराओं को कम आंकते है | वह भी हिन्दू स्टडीज के द्वारा ज्ञान को आत्मसात करते हुए | सुखी, संपन्न और दीर्घ आयु हो, एक नव समाज का निर्माण कर सकते है | वह समाज, जहाँ मनुष्य समस्त सुखों को भोगते हुए | ज्ञान और अंततोगत्वा मोक्ष को पा, भवसागर से पार उतर जाता है |

निष्कर्ष

बात "बिना ज्ञान नर पशु समाना" की हो अथवा "वसुधैव कुटुम्बकम" की | एक और संसार, भारत से मिले शून्य और हमारी भारतीय वैदिक शिक्षाओं को भुना | दुनिया में ताल ठोक रहा है | तो वहीँ दूसरी और हम (विशेषकर आज के युवा) पाश्चात्य अंधानुकरण और भ्रम के चलते खुद के गौरवशाली इतिहास और सटीक विधाओं को भूलने लगे है | बहुसंख्यक होते हुए भी हिन्दू स्वदेश में हिन्दू स्टडीज से वंचित और विमुख है | तथा घर का जोगी जोगडा और बाहर का जोगी सिद्ध मानने लगा है | नालंदा हो अथवा यूनान, चाणक्य हो यां अरस्तु | बिना व्यवाहरिक ज्ञान (और नैतिक शिक्षा) के पाना असंभव है | यदि जीवन में अनन्त सुख, ज्ञान और अंततः मोक्ष चाहिए | तो दैनिक जीवन में साश्वत हिन्दू धर्म और उसकी शिक्षाओं को जोड़ना ही होगा | गुरुकुल भले ही ना जाओ | परन्तु उपलब्ध संसाधनों, ज्ञान, परम्पराओं और हिन्दू स्टडीज को तो पढ़ना ही होगा |

सन्दर्भ सूची

[1] K. Bhardwaj, भटकती दुनिया बिखरते लोग: प्रेरणादायक 21 कहानियां, Notion Press, 2021.

[2] C. O. I. D. Net, “Census Of India Dot Net,” [ऑनलाइन]. Available: https://censusofindia.net/#Hindu_Population.

[3] म. तिवारी, “लाइव हिंदुस्तान मथुरा,” 10 January 2026. [ऑनलाइन]. Available: https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/rss-mohan-bhagwat-says-india-will-become-hindu-rashtra-no-one-will-stop-201768058148446.html.

[4] S. K. Arunansh B Goswami, “First Post,” 19 February 2024. [ऑनलाइन]. Available: https://www.firstpost.com/opinion/embracing-hindu-studies-nurturing-wisdom-in-the-21st-century-13739485.html.

[5] D. S. Kumari, “Shiksha Me Ho Rahe Parivartan ka Samajshashtriye Adhayan,” *IJCRT,* संस्क. 14, क्र. http://ijcrt.org/viewfull.php?&p_id=IJCRT2601339, p. 8, 2026.

[6] द. भास्कर, “दैनिक भास्कर,” दैनिक भास्कर , 2021. [ऑनलाइन]. Available: https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/varanasi/news/4-departments-of-bhu-varanasi-will-make-students-proficient-in-hinduism-and-science-can-take-masters-degree-in-hindu-studies-admission-process-begins-128821720.html.

[7] J. Trinidade, “YOUTH IN CMAG DOT COM,” YOUTH IN CMAG DOT COM, 14 JANUARY 2025. [ऑनलाइन]. Available: https://youthincmag.com/the-significance-and-essence-of-hindu-studies-in-education.

[8] J. KOSHY, “Stephen Hawking said Vedas had a 'theory' superior to Einstein’s thesis, says Harsh Vardan,” THE HINDU, 16 MARCH 2018. [ऑनलाइन]. Available: https://www.thehindu.com/news/national/stephen-hawking-said-vedic-theory-superior-to-einsteins-science-minister-claims/article23272193.ece.

[9] R. Kabir, “India Today Science Story,” India Today, 28 February 2026. [ऑनलाइन]. Available: https://www.indiatoday.in/science/story/brain-structure-vedas-neuroscience-tony-nader-human-physiology-science-news-ancient-indian-texts-scriptures-national-science-day-2026-cv-raman-2875795-2026-02-28.